JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/1

अधीयते वा—पठ्यते आधिक्येन स्मर्यते गम्यते वा तदित्यध्ययनम् । (स्थाटी प ५)

जो पढ़ा जाता है, अधिक स्मृत और ज्ञात किया जाता है, वह अध्ययन है ।

अधीयन्ते—ज्ञायन्ते यैस्तान्यध्ययनानि । (सूर्यटी प १४६)

जिनसे जाना जाता है, वे अध्ययन हैं ।

४१. अज्झावय (अध्यापक)

अध्यापयतीति अध्यापकः । (उचू पृ २०७)

जो अध्यापन कराता है, वह अध्यापक है ।

४२. अज्झोयर (अध्यवतर)

अहियं उदरं अज्झोयरं । (जीतभा १२८३)

अधि—आधिक्येनावपूरणं स्वार्थदत्ताधिश्रयणादेः साध्वागमनमवगम्य तद्योग्यभक्तसिद्ध्यर्थं प्राचुर्येण भरणमध्यवपूरः । (प्रसाटी प १४४)

पकाते समय (साधुओं के निमित्त) अधिक ऊरना/डालना अध्यवतर (दोष) है ।

४३. अज्झोवण्ण (अध्युपपन्न)

अधिकं उपपण्णा अज्झोवण्णा । (सूचू १ पृ ७०)

जो अत्यधिक उपपन्न/आसक्त हैं, वे अध्युपपन्न हैं ।

४४. अट्ट (आर्त्त)

ऋतं—दुःखं तन्निमित्तं दुरज्झवसातो अट्टं । (दअचू पृ १६)

जो अध्यवसाय ऋत/दुःख का कारण है, वह आर्त्त (ध्यान) है।

४५. अट्ट (अट्ट)

अट्यते—अतिक्राम्यतेऽनेनेत्यट्टः । (भटी प १४३१)

जिसके द्वारा गमन-आगमन किया जाता है, वह अट्ट/आकाश है ।

४६. अट्ठ (अर्थ)

इयर्त्ती इच्छति वा अर्थः । (उचू पृ १६७)

जो प्राप्त किया जाता है, वह अर्थ/धन है ।

जिसकी इच्छा की जाती है, वह अर्थ/धन है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com